नागार्जुनः की दृष्टि में नारी की शोचनीय स्थिति

डॉ0 अनिता कुमारी

भारतीय संस्कृति, समाज तथा साहित्य में नारी का स्थान बड़ा ही सम्माननीय माना गया है। प्राचीन साहित्य में इसके अनेक उदाहरणों के होते हुए भी वास्तविक रूप से आज के भारतीय समाज में पुरूष की सहधर्मिणी होते हुए भी वह पति की अनुगामिनी और उसकी परछाई मात्र बन कर रह गई है। उसकी दुर्दशा की ओर समाज सुधारकों एवं देश के नीति निर्धारकों का ध्यान शायद ही कभी गया हो। पुरूष को बहुविवाह, सौंदर्य लोलुपता की ताक झांक, परकीया प्रेम आदि सब बातों के लिए खुली छूट दे रखी है पुरूष प्रधान समाज ने, किन्तु इसके विपरीत भारतीय नारी आज भी अशिक्षा अन्ध विश्वास तथा कुल मर्यादा के नाम पर जीवन के हर क्षेत्र में आज भी पिछ़डी हुई, दकियानूसी रूढ़ियों के बन्धक में जकड़ी हुई पिंजरबद्ध पक्षिणी की भांति छटपटा रही है। नागार्जुन ने पुरूष की अर्द्धांगिनी और जननी की पीड़ा को मिथिलॉचल में बहुत निकट से देखा है। उन्हे पौराणिक पात्रों में शबरी, अहल्या, सीता, सूपनखा, और रेणुका की दुर्दशा, उन पर पुरूष समाज द्वारा ढाए गए जुल्मों की याद हैं, तो साथ ही बहुविवाह, सती प्रथा और दहेज की बलिवेदी पर चढ़ती आज के युग की नवयुवतियों की करूण कथा भी कहीं गहरे में मर्मान्तक वेदना पहुँचाती हैं।